

Jān. 1, 186. 3, 37. आक्रामति वृद्धः कुतपम् P. 4, 3, 40, Sch. — 2) die achte Stunde des 30theiligen Tages, die Zeit um Mittag AK. 2, 7, 31. TRIK. H. 141. H. an. MED. दिवसस्याष्टमे भागे मन्दभवति भास्करः । स कालः कुतपो ज्ञेयः पितृणामन्नमन्तयम् ॥ (vgl. Sch. zu H. 141) ÇĀTĀTAPA im ÇKDR. आरभ्य कुतपे आहं कुर्यादग्निं वृधः । विधिज्ञो विधिमास्थाय रैरुहिणं तु न लङ्घयेत् ॥ ÇĀDDHAT. ebend. परमान्नं यो दानात्पितृणामौपकारिकम् । वाञ्छायायां पूर्वस्यां कुतपे दत्तिणामुखः ॥ MBH. 13, 6040. — 3) N. eines Grases, *Poa cynosuroides* Retz. (कुश), TRIK. H. an. MED. — 4) Korn (धान्य) TRIK. — 5) Schwestersohn H. 543. H. an. — 6) Tochtersohn MED. — 7) ein Brahman. — 8) Gast H. an. — 9) Sonne H. an. MED. — 10) Feuer. — 11) Ochse H. an. — 12) ein musik. Instrument H. an. MED. — Nach MED. ist das Wort bloss in der 8ten Bed. masc., TRIK. und H. an. theilen die von ihnen gekannten Bedd. dem masc. zu. — In den beiden ersten, allein belegbaren Bedd., lässt sich das Wort in 1. कु + तप Hitze zerlegen; WILS. hat auch noch die adj. Bed. *slightly hot, mild, tepid*. — Vgl. कौतप.

कुतपसप्तक (कु + सप्त) n. a Çrāddha in which seven constituents occur, noon, a horn platter, a Nepal blanket, silver, sacrificial grass, *sesamum* and kine WILS.

कुतपसौम्य (कु + सौ) m. gaṇa शाकपार्थिवदि SIDDH. K. 46, b.

कुतपस्विन् (1. कु + तप) m. ein böser, schlechter Büsser PAÑKAT. 126, 1.

कुतर्क (1. कु + तर्क) m. ein falsches Urtheil, Sophisma Schol. zu KAP. 1, 74. °शास्त्र BHĀG. P. 6, 9, 35. व्यासवाक्यत्रलौघेन कुतर्कतरुहारिणा MĀRK. P. 1, 10. °पयस्थित RĪGĀ-TAR. 3, 378.

कुतस् (von 1. कु) adv. P. 5, 3, 7.8. Vop. 7, 110. 1) = कस्मात्, abl. des pron. interr. कः देवं मनः कुतो अग्निं प्रजातम् RV. 1, 164, 18. कुतो ऽग्निं वृक्षी मित्ता AV. 8, 9, 4. कुतो लब्धमिदमभरणम् VET. 13, 14. कुतः कालात्समुत्पन्नम् VP. in Z. d. d. m. G. 6, 93. — 2) *woher? von wo?* कुत एतास एते RV. 1, 163, 1.3. कुत इयं विस्तृष्टिः 10, 120, 6. AV. 8, 9, 1. 10, 2, 10. 14. 11, 8, 8. 12. ÇAT. Br. 14, 3, 1, 16. 8, 15, 9. कुतः स्म जाताः ÇVETĪÇV. UP. 1, 1. कुतस्त्वमसि संप्राप्तः HĪP. 2, 24. 4, 27. अथ यो ऽसौ तृतीयो वः स कुतः कस्य वा पुनः N. 22, 10. HIT. 40, 21. — 3) *wohin?* क्रमतो गां पैदेकेन द्वितीयेन दिवं विभोः । खं च कायेन मरुता तातेयिष्य क्तो गतिः ॥ BHĀG. P. 8, 19, 34. — 4) *woher? warum? weswegen?* कुतः पञ्चाहस्य अश्यासः स्यात् LĀT. 10, 4, 7. कुतो वापि भयं युष्माकम् R. 1, 14, 36. कुतः कल्याणवृत्ताया ज्ञाताया विपुले कुले । चापल्यं तात वैदेह्यास्तर्पस्विषु विशेषतः ॥ 3, 1, 12. कुत इमुच्यते ÇĀK. 71, 10. ईदृग्विनोदः कुतः 38. 21, 14. Häufig im Drama vor einem dist., welches eine vorangehende Aeusserung oder Ausdrucksweise begründet, ÇĀK. 4, 17. 10, 7. 17, 15. 27, 18. 32, 6. 58, 5. 60, 19. — 5) *wie? auf welche Weise?* कुतस्तु खलु सेम्यैवं स्यादिति क्वाच कथमसतः सज्जायेतिति KĪND. UP. 6, 2, 2. कुत एव परित्यक्तं सुतं शक्याम्यहं स्वयम् BRĪHMAN. 1, 28. कुतः श्रमो भर्तृसमीपतो ऽथ मे SĀV. 5, 28. PAÑKAT. 119, 5. II, 87. HIT. Pr. 44. 10, 2. I, 136. 194. ÇĀK. 15. 111. VID. 58. VET. 29, 17. ÇUK. 40, 4. DHŪRTAS. 76, 12. — 6) *wie viel weniger, geschweige denn:* न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मण्यो नानाहिताग्निर्नविद्वान् स्वैरी स्वैरिणी कुतः KĪND. UP. 5, 11, 5. MUND. UP. 2, 2, 10. MBH. 3, 1126. BHĀG. 4, 31. 11, 43. DRAUP. 3, 14. न — शक्य एष दिव्यो मरुतः । द्रष्टुं वाप्यय वा स्प्रष्टुमोराष्टं कुत एव वा INDR. 1, 17. R. 1, 13, 11. 23, 11. 2, 48, 19. 3, 4,

27. DAÇ. 2, 24. VIÇV. 12, 4. BHARTR. 2, 91. — 7) in *अकुतो* von keiner Seite her, welches am Anf. einiger adj. comp. erscheint, ist *कुतस्* als indefin. aufzufassen. *अकुतोभय* von keiner Seite her Furcht oder Gefahr sehend, von keiner Seite her Gefahr bietend: *अकुतोभयः सुखेनास्ते* PAÑKAT. 107, 2. I, 321. MBH. 4, 15. R. 4, 12, 13. 46, 5. पन्थानमकुतोभयम् 2, 34, 31. 46, 21. यास्यत्यङ्गाकुतोभयम् (subst.) BHĀG. P. 1, 12, 28. *अकुतोमृत्यु* von keiner Seite her den Tod fürchtend 3, 17, 19. Vgl. u. 8, b. — 8) in Verbindung mit अपि, चिद् und चन als adv. indefin. a) mit अपि: कुतो ऽपि कारणात् aus irgend einem Grunde PRAB. 4, 10. कुतो ऽपि धनिकात्किंचिद्व्यमादाय PAÑKAT. 229, 21. तेषां मध्ये विचरन् कुतो ऽपि (so wohl zu schreiben st. विचरन्कुतो ऽपि) भयमिति सुखेनास्ते von keiner Seite her Gefahr 68, 25. — b) mit चिद् von irgend einem, von einem: कुतश्चित्संलपतो जनसमाज्ञादुपलभ्य DAÇAK. in BENF. CHR. 179, 7. *irgendwoher:* इत आज्ञातो धर्मतः कुतश्चित् RV. 1, 179, 4. 7, 1, 2. न जायते ध्रियते वा विपश्चिन्नाय कुतश्चिन् नभूव कश्चित् KATHOP. 2, 18. R. 2, 74, 17. PAÑKAT. 239, 5. ÇĀK. 110, 15, v. 1. *अकुतश्चित्कुतश्चिद्* MBH. 12, 7956. *अकुतश्चिदपि* sich von keiner Seite her fürchtend BHĀG. P. 7, 5, 47. von keiner Seite Gefahr darbietend 5, 9, 21. R. 2, 50, 8. पतः कुतश्चित्पशोरारभ्य von einem beliebigen Sch. zu KĀT. ÇĀ. 1, 5, 10 (S. 89, Z. 8). — c) mit चन (च न) von keiner Seite her in einem negat. Satze (die vorangehende Negation wird dadurch nicht aufgehoben) RV. 1, 136, 1. न तमंहे न डंरितं कुतश्चन नारायत्यस्तितरुः 2, 23, 5. 7, 82, 7. 8, 19, 6. 10, 39, 11. तस्य न कुतश्चनोपाव्याधो भवति TS. 2, 2, 9, 2. न विभेति कुतश्चन TAITT. UP. 2, 9. M. 6, 40. न हि तेषां कल्याणानां प्रभवति कुतश्च न मृत्युः BHĀG. P. 5, 24, 14. nach keiner Seite hin, nirgendshin: स्वां स्वां सेनां समुत्सृज्य मा च कश्चित्कुतश्च न । गच्छेत् R. 5, 74, 21. — Vgl. den Artikel 1. क.

कुतस्तराम् (von कुतस्) adv. *wie? auf welche Weise?* KAP. 1, 81.

कुतस्त्य (von कुतस्) adj. *woher kommend?* WILS.

कुतापस (1. कु + ता) m. ein böser Büsser, Asket; f. ई KATHAS. 13, 141.

कुतित्तिरि (1. कु + ति) m. ein best. dem Rebhuhn verwandter Vogel SUCR. 1, 201, 1.

कुतीपाद m. N. pr. eines Sāman-Dichters Ind. St. 3, 213.

कुतीर्य (1. कु + तीर्य) ein schlechter Lehrer: कुतीर्यादागतं दग्धमपवर्णं च भक्षितम् ÇIKSHĀ 50. — Vgl. सुतीर्य MĀLAV. 11, 16.

कुतुक n. gaṇa युवादि zu P. 5, 1, 130. = कुतूहल, कौतुक AK. 1, 1, 2. 31. H. 926. केलिकलाकुतुकेन aus Verlangen nach Gl. 1, 42.

कुतुप 1) m. oxyt. (von कुतू) ein kleiner Oelschlauch P. 5, 3, 89. AK. 2, 9, 33. H. 1025. VJUTP. 209. — 2) m. n. = कुतप 2. ÇABDAR. im ÇKDR.

कुतुम्बुरु (1. कु + तु) n. = कुत्सितं तुम्बुरु (= तिन्दुकीफल) P. 6, 1, 143, Sch. — Vgl. कुस्तुम्बुरु.

कुतू f. Oelschlauch P. 5, 3, 89. AK. 2, 9, 33. H. 1025.

कुतूष्णक m. = कुकूष्णक MĀDHAV. im ÇKDR.

कुतूहल n. 1) Neugier, das Interesse für eine ungewöhnliche Erscheinung, dringendes Verlangen: रम्यवस्तुसमालोके लोलता स्यात्कुतूहलम् SĀB. D. 130. प्रविशतोऽं तु तां दृष्ट्वा — अनुग्रहमुत्तत्र बाला ग्रामिपुत्राः कुतूहलात् N. 13, 23. तस्याः समीपे तु नलं प्रशशंसुः कुतूहलात् 1, 15. उपकोशामध्यायधर्य राज्ञा त्वतिकुतूहलात् । सदस्युद्घाटिता तत्र मञ्जूषा स्फोटिता गर्भाः KATHAS. 4, 80. उज्जितशब्देन जनिताः नः कुतूहलम् तदा मृताच्छातुः